

प्राथमिक शिक्षा में समन्वित (क्रॉस करिकुलर) शैक्षिक दृष्टिकोण

दीपक चांदेरे*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का चौथा अध्याय 'स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षा-शास्त्र' की चर्चा करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी और रुचिकर (engaging) होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की इस अपेक्षा की पूर्ति हेतु 'शिक्षा' को 'जीवन' के और समीप लाया जाना चाहिए। बच्चे औपचारिक तौर पर स्कूल में तथा अनौपचारिक तौर पर जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा सीखते हैं। बच्चों के संदर्भ में इन दोनों शिक्षा के माध्यमों में बड़ी दूरियाँ नज़र आती हैं। स्कूली शिक्षा विषयों में बाँटी गई है, पर जीवन में विषयों के अनुसार विभिन्न खंड नहीं होते। प्राथमिक शिक्षा में कक्षा पाँचवीं तक विषय विशेष के ज्ञान की अपेक्षा नहीं होती। अतः इस प्राथमिक स्तर पर समन्वित (क्रॉस करिकुलर) शैक्षिक दृष्टिकोण स्वीकार किया जा सकता है। ऐसा करने से प्राथमिक शिक्षा को जीवन के समीप लाना अधिक सरल हो जाएगा। हर क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान के कारण मानवीय ज्ञान में हर पल वृद्धि हो रही है; मानो ज्ञान का विस्फोट सा हो गया हो। इस विस्फोट को शिक्षा व्यवस्था द्वारा आत्मसात करना एक चुनौती है। ज्ञान के विस्फोट की गति तो दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाएगी। ऐसे हालात में कितने विषय स्कूली पाठ्यक्रम में जोड़ पाएँगे? क्या इस समस्या का कोई स्थायी हल हो सकता है? इन सवालों से जुड़े एक जवाब की चर्चा इस लेख में की गई है। इसी उद्देश्य के आधार पर इस लेख में वर्तमान के परिदृश्य में समन्वित शैक्षिक दृष्टिकोण की स्वीकृति की विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई है।

शिक्षा तथा जीवन

पहले यह मान्यता थी कि बच्चा स्कूल में दाखिल होने से पहले केवल एक अलिखित स्लेट या कोरा कागज़ होता है पर ज्ञानरचनावादी चिंतन ने इस मान्यता को खारिज किया। बच्चे के सीखने की प्रक्रिया उसके जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है। बच्चा स्कूल में दाखिल होने के पूर्व अपने परिवेश, परिवार तथा दोस्तों के माध्यम से कई बातें सीखता है। बच्चे के इस सीखने की प्रक्रिया में विषयों के खंड नहीं होते पर

बच्चा स्कूल में दाखिल होते ही विषयों की मर्यादाओं में सीखना शुरू कर देता है। बच्चा स्कूल में दाखिल होने के पूर्व जिस सीखने की प्रक्रिया का आदी होता है उस प्रक्रिया में ज्ञान को समग्रता से हासिल किया जाता है। स्कूल में विषयों के खण्ड में ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में समग्रता का अभाव दिखाई देता है। स्कूली शिक्षा में समग्रता का यह अभाव ज्ञान की प्राप्ति को सहजता से दूर ले जाता है। बच्चा स्कूल के साथ-साथ अपने अनुभवों से भी सीखता रहता है।

*अधिव्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था (डायट) वाशिम, लाखाडा रोड, वाशिम, महाराष्ट्र 444 601

बच्चों का यह सीखना विभिन्न विषयों के खण्ड में बाँटा नहीं जा सकता। अतः बच्चा ‘जीवन शिक्षा’ और ‘स्कूली शिक्षा’ में एक खाई अनुभव करने लगता है। स्कूली शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त, व्यक्ति के जीवन में आने वाली समस्याओं तथा विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति अपने स्कूल में हासिल की हुई शिक्षा का प्रयोग करे; ऐसी अपेक्षा की जाती है। यहाँ पर भी किसी विषय विशेष की मर्यादा में जीवन की परिस्थितियाँ नहीं होती हैं। अतः ज्ञान के समग्र स्वरूप में ही स्कूली शिक्षा का जीवन में प्रयोग किया जाता है। महान दार्शनिक हरबर्ट स्पेंसर कहते हैं—“शिक्षा का मतलब संपूर्ण जीवन है।” अर्थात् ‘जीवन’ और ‘शिक्षा’ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि स्कूली शिक्षा में विषयों की जो गैर-पारदर्शी व्यवस्था विकसित तथा अधिकाधिक कठोर होती गई है वह शिक्षा को जीवन के समीप लाने में रुकावट बन रही है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* मुख्य रूप से शिक्षा के समग्र तथा एकीकृत स्वरूप पर जोर देती है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर प्राथमिक शिक्षा में समन्वित (क्रॉस करिकुलर) शैक्षिक दृष्टिकोण का स्वीकार करना व्यावहारिक और उपयुक्त रास्ता दिखाई देता है।

भार रहित अधिगम

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 हर प्रकार से ‘भार रहित अधिगम’ (Learning Without Burdon) की बात करती है। आमतौर पर ‘स्कूली बस्ते के बोझ’ पर काफ़ी चर्चा समाज में होती रहती है। स्कूलों द्वारा विद्यार्थियों को दिए जाने वाले ‘गृह कार्य के बोझ’ पर कभी-कभी अभिभावक आवाज़ उठाते हुए दिखाई देते हैं। शिक्षाविद् ‘पाठ्यांश के बोझ’ पर चिंता व्यक्त करते हैं पर एक और बोझ स्कूली शिक्षा में है; और वह है

‘विषयों की बढ़ती संख्या का बोझ’। उदाहरण के लिए, अगर हम महाराष्ट्र की बात करें तो, महाराष्ट्र की पहली प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या 1968 में, प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा तथा गणित (यह दो मुख्य विषय) और कला, कार्यानुभव एवं शारीरिक शिक्षा (तीन उपविषय) अर्थात् पाँच विषय शामिल किए गए। 1988 में मुख्य विषयों में परिसर अभ्यास तथा उपविषयों में मूल्य शिक्षा इन दो विषयों को अंतर्भूत करने से विषयों की संख्या बढ़कर सात हो गई। 1996 से उच्चतम न्यायालय के आदेश अनुसार ‘पर्यावरण शिक्षा’ को शामिल किया गया। वर्ष 2000 में राज्य सरकार के निर्णय अनुसार अंग्रेजी भाषा का पहली कक्षा में अंतर्भाव किया गया। वर्ष 2009 में गैर मराठी भाषिक स्कूलों में मराठी भाषा को अनिवार्य किया गया। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में आठ विभिन्न भाषिक पाठशालाएँ हैं। इस तरह से विषयों की संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही है। *महाराष्ट्र राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा 2010* के अनुच्छेद ‘स्कूली पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण परिवर्तन’ में कहा गया है— “ज्ञान के विस्फोट के दौर में स्कूली पाठ्यक्रम में जानकारी बढ़ती जा रही है। परंपरागत ज्ञान के साथ-साथ नयी संकल्पना, विचारधारा तथा अनुसंधान स्थान देने से पाठ्यचर्या के क्षेत्र में वृद्धि होती गई है। इसी कारण विषयों का बोझ बढ़ता गया और यह बोझ स्कूली बस्ते के बोझ में परिवर्तित होता गया।” इसीलिए हम जब ‘भार रहित अधिगम’ की बात करते हैं तब विषयों की बढ़ती संख्या के भार को अनदेखा नहीं कर सकते।

सहज शिक्षा

अगर स्कूली जीवन में सबसे ज़्यादा आनंद देने वाले पलों को याद करें तो उनमें स्कूल का पहला दिन, अपना या अपने दोस्तों का जन्मदिन, राष्ट्रीय

तयौहार, पिकनिक, क्षेत्र का दौरा, सांस्कृतिक कार्यक्रम या इस तरह के अन्य पलों को इस शृंखला में जोड़ सकते हैं। स्कूली जीवन में पाठ्यक्रम गतिविधियों तथा सह पाठ्यक्रम गतिविधियों का सीखने की प्रक्रिया में अपना महत्व है। यह तो सर्वमान्य है कि ऐसी गतिविधियों से विद्यार्थी काफ़ी कुछ सीखते हैं। यदि यह सवाल पूछा जाए कि इन गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों ने कौन से एक विषय विशेष का ज्ञान प्राप्त किया, तो इसका सटीक जवाब देना मुश्किल होता है। इससे यह संकेत मिलता है कि पाठ्यक्रम गतिविधियों तथा सह पाठ्यक्रम गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों में एक साथ कई विषयों की समझ विकसित होती है। इसका मतलब यह है कि अधिगम की प्रक्रिया विषयों के कठोर वर्गों में विभाजित हो, यह जरूरी नहीं। वरन् अगर हम विषयों की कठोरता को हटा कर लचीलेपन को स्वीकार कर सकें तो यह शिक्षा प्रक्रिया को अधिक सहज बना देगी।

उम्मीद की किरण

भारत में शिक्षा की प्राचीन परंपरा रही है। यद्यपि प्राचीनकाल से भारतीय शिक्षा में विभिन्न विषयों का समावेश रहा है, पर बुनियादी शिक्षा में सभी विषयों को समन्वित पद्धति से रखा जाता था। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के 11वें अध्याय 'समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर' में बताया गया है— “भारत में समग्र एवं बहु-विषयक तरीके से सीखने की एक प्राचीन परंपरा है। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों पर आधारित व्यापक साहित्य है जो विभिन्न क्षेत्रों में विषयों के संयोजन को प्रकट करते हैं।” जब से अंग्रेजों द्वारा शिक्षा व्यवस्था को संचालित किया गया तब से बुनियादी शिक्षा में विषयों की दीवारें काफ़ी ठोस

होती गईं। महान शिक्षाविद् जॉन ड्यूवी का पाठ्यचर्या के संदर्भ में मानना है, ‘पाठ्यचर्या का उद्देश्य विभिन्न प्रकार का ज्ञान देना होता है। ज्ञान जीवन के अनुभवों से उजागर होता है; इसीलिए पाठ्यचर्या को विभिन्न विषयों में बाँटना उचित नहीं है। समन्वित पाठ्यचर्या होनी चाहिए, कोई समस्या या कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा हासिल की जाए। ज्ञान को विषयों में बाँटना यह बात कृत्रिम है। ज्ञान तो समन्वित पद्धति से हासिल होना चाहिए।’ यानी शिक्षा तथा जीवन को समीप लाने के लिए ‘समन्वित शिक्षा पद्धति’ एक असरदार रास्ता है।

नयी तालीम

महात्मा गांधी ने अपनी नयी तालीम (वर्धा शिक्षा पद्धति) को रखते हुए कहा था, “मैं उद्योग के माध्यम से सभी विषयों का ज्ञान देना चाहता हूँ। मेरी योजना में इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, भाषा, चित्रकारी, संगीत आदि विषयों का समावेश किया है। पर मेरी शर्त है कि सभी विषयों का ज्ञान केवल पुस्तकों तक सीमित न हो। ज्ञान जीवन व्यापी होना चाहिए और उसे उद्योगों के माध्यम से हासिल किया जाना चाहिए।” अर्थात् महात्मा गाँधी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा योजना में विभिन्न विषयों को उद्योग के माध्यम से समन्वित पद्धति द्वारा विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे समन्वित (क्रॉस करिकुलर) शैक्षिक दृष्टिकोण का प्रयोग आज भी महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित सेवाग्राम आश्रम में संचालित ‘आनंद निकेतन’ विद्यालय में दिखाई देता है।

महात्मा गांधी के शैक्षिक चिंतन को अपने शब्दों में रखते हुए विनोबा भावे अपनी *शिक्षा: तत्त्व आणि व्यवहार* पुस्तक में कहते हैं, “मिट्टी और मटका एक

ही है या दो अलग-अलग चीजें? दो कहोगे तो, मिट्टी दे दो और मटका ले जाओ। एक ही है तो वहाँ मिट्टी पड़ी है उस में पानी भरो। मिट्टी और मटके के इस रिश्ते को 'समवाय' कहते हैं। वर्धा शिक्षा पद्धति को मैंने 'समवाय-पद्धति' नाम दिया है। क्योंकि इस पद्धति में उद्योग तथा शिक्षा इन दोनों का 'समवाय' किया गया है।" विनोबा भावे द्वारा समन्वित (क्रॉस करिकुलर) शैक्षिक दृष्टिकोण को 'समवाय-पद्धति' कहा गया है।

प्रौद्योगिकी के विकास से मानव मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को गहराई से समझ पाना संभव हो रहा है। व्यक्ति के सीखने की प्रक्रिया मूलतः मस्तिष्क में घटित होती है। मानव मस्तिष्क में तर्क, भाषा, अंतरिक्ष बुद्धि आदि हर विशेष कार्य हेतु विशिष्ट केंद्र होता है। पर ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया में मस्तिष्क के सभी केंद्र समन्वित पद्धति से समाहित होते हैं। वरन् मस्तिष्क के अधिक से अधिक केंद्र सीखने की प्रक्रिया में शामिल होने से सीखने की प्रक्रिया अधिक असरदार बन जाती है। ऐसा जरूरी नहीं है कि गणित सीखते हुए मस्तिष्क का सिर्फ गणितीय क्रियाओं वाला केंद्र क्रियान्वित रहे, मस्तिष्क के जितने अधिक से अधिक केंद्र उस क्रिया में सम्मिलित हो जाएँ उतना ही सीखने की प्रक्रिया प्रभावी हो जाती है। इसीलिए समन्वित शिक्षा प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है।

समन्वित (क्रॉस करिकुलर) शैक्षिक दृष्टिकोण ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया शिक्षा कहलाती है। विद्यार्थी अपने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं तथा अनुभवों से सीखते रहते हैं। जीवन हो या स्कूल; वहाँ पर प्राप्त एक ही अनुभव से विद्यार्थी भाषा, गणित, विज्ञान आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं। जरूरत है कि शिक्षक समन्वित शैक्षिक दृष्टिकोण को

समझें और विद्यार्थियों को अनुभव देते हुए समन्वित शैक्षिक दृष्टिकोण को स्वीकार करें। इसके साथ ही शैक्षिक अनुभवों को विषयों में नहीं बाँटे वरन् सजगता से अधिकाधिक विषयों का समन्वय स्थापित करते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान के मूल एकीकृत स्वरूप का आनंद दिलाएँ। आइए समन्वित शैक्षिक दृष्टिकोण को स्वीकारने वाले तीन शिक्षकों के अनुभवों की चर्चा करते हैं।

उदाहरण 1

महाराष्ट्र में अमरावती ज़िले के सोनोरा नामक गाँव में कार्यरत एक अध्यापक ने अपने चौथी कक्षा के विद्यार्थियों को गणेश उत्सव के दिनों में एक अध्ययनपरक अनुभव दिया। सबसे पहले अध्यापक ने विद्यार्थियों के साथ देश के विभिन्न राज्यों में मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहारों के बारे में चर्चा की। इसके बाद यह चर्चा की गई कि लोकमान्य तिलक द्वारा महाराष्ट्र में सार्वजनिक गणेश उत्सव को मनाने की परंपरा किस उद्देश्य से शुरू की गई थी। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए शिक्षक ने विद्यार्थियों को अवगत कराया कि, 'गणेश जी पर चढ़ाए जाने वाले फूलों को गणेश विसर्जन के दिन नदी में बहा देने की परंपरा जब शुरू हुई तब नदियाँ बड़ी थीं और गाँव छोटे थे पर आज हालात बिल्कुल उलटे हैं, आज गाँव बड़े हो गए हैं और नदियाँ छोटी।' विद्यार्थियों ने उनके घर के चढ़ावे के फूलों को नदी या तालाब में न बहाते हुए स्कूल में लाकर जमा किया। अध्यापक की निगरानी में जमा किए गए सभी फूल-पत्तों को स्कूल में एक छोटा गड्ढा करके उसके भीतर डाल दिया गया और उसे मिट्टी से भर दिया गया। साथ ही और एक छोटा गड्ढा करके उसमें प्लास्टिक के टुकड़े तथा प्लास्टिक की थैलियों को

डाल कर मिट्टी से भर दिया गया। लगभग तीन माह बाद अध्यापक की निगरानी में उन गड्ढों की खुदाई की गयी। खुदाई के उपरांत विद्यार्थियों ने पाया कि जिस गड्ढे में फूल-पत्ते डाले थे, उनका विच्छेद होकर खाद में परिवर्तन हो गया है। उसी खाद का पेड़ों के लिए उपयोग किया गया। विद्यार्थियों ने यह भी देखा कि जिस गड्ढे में प्लास्टिक डाला था उस गड्ढे में प्लास्टिक का विच्छेद नहीं हुआ है। इसके साथ ही विद्यार्थियों ने अनुभव किया कि प्लास्टिक के पास की मिट्टी से, दुर्गंध आ रही थी। इस अनुभव के अंत में अध्यापक और विद्यार्थियों ने जो कुछ देखा और अनुभव किया उसके बारे में लिखने का कार्य दिया। जब अध्यापक ने विद्यार्थियों के अभिहस्तांकन कार्य को देखा तो यह पाया कि एक ही अनुभव के द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न संकल्पनाएँ ज्ञात हो गई थीं, उदाहरण के लिए, भाषा विषय के संदर्भ में रचनात्मक लेखन करना, अवलोकन करके लिखना तथा अपने विचारों को अभिव्यक्त करना; गणित विषय की समय को मापना; पर्यावरण विज्ञान विषय की कचरे का योग्य पद्धति से उपयोग करना तथा इनके पुनःप्रयोग में लाने की पद्धतियाँ ज्ञात करना और विभिन्न जीवन संसाधनों का योग्य पद्धति से उपयोग करना। इसके साथ ही इतिहास विषय की छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा अपने आज्ञापत्र में दिए गए पर्यावरण रक्षण के संदेश आदि संकल्पनाएँ विद्यार्थियों द्वारा सहजता से आत्मसात की गई थीं।

उदाहरण 2

पाँचवीं कक्षा का एक विद्यार्थी था जिसे पहली कक्षा से ही पढ़ने में रुचि नहीं थी। परिणामस्वरूप वह विद्यार्थी पाँचवीं कक्षा में मातृभाषा (मराठी) पढ़ नहीं पाता था। उसके अध्यापक इस बात को लेकर काफ़ी चिंतित

थे। उन्होंने कई बार उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की परंतु कोई परिणाम नहीं निकला। कुछ दिनों बाद अध्यापक ने पाया कि कक्षा में दीवारों पर लगाए गए राज्य, देश तथा दुनिया के नक्शों के सामने वह घंटों खड़े रहकर अवलोकन करता रहता है। एक बार अध्यापक ने देखा कि वह देश के नक्शे पर ऊँगली रखकर एक शहर से दूसरे शहर के सड़क मार्ग पर ऊँगली घुमा रहा है। अध्यापक उसके समीप गए तब उसकी ऊँगली बनारस के पास थी। अध्यापक ने उससे पूछा, “यह कौन-सा शहर है, पता है?” उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब अध्यापक ने कहा, “बेटा, यह बनारस है। यहाँ से आगे इस रास्ते से गए तो यह रही दिल्ली।” दिल्ली का नाम सुनते ही उसकी आँखें चमक उठीं। उसने दिल्ली का नाम कई बार सुना था तथा दिल्ली के प्रति उसके दिल में आकर्षण था। दूसरे दिन अध्यापक ने उस विद्यार्थी को देश का नक्शा लेकर पास बुलाया और पूछा, “बेटा, इस नक्शे में ‘दिल्ली’ कहाँ है दिखाओ?” विद्यार्थी ने तुरंत दिल्ली के पास ऊँगली रखकर दिल्ली को दर्शाया। अध्यापक को लगा कि दिल्ली जो कि देश की राजधानी होने के कारण नक्शे में अलग से चिह्नित होती है तो इसे ढूँढ़ पाना आसान ही है। तब अध्यापक ने पूछा, “नक्शे पर ‘बनारस’ कहाँ है”, तब उस विद्यार्थी ने थोड़ा समय ज़रूर लिया पर सटीक जवाब दिया। यह देखकर अध्यापक को काफ़ी खुशी हुई और उन्होंने उसे प्रोत्साहित करते हुए और कुछ नए शहरों के नाम बताए। वह विद्यार्थी उनपर ऊँगली रखकर देखता था। कुछ ही दिनों में वह देश के लगभग सभी मुख्य शहरों के नाम पढ़ने लग गया। अध्यापक ने धीरे-धीरे नक्शे की सहायता से उसे भाषा पढ़ने के लिए प्रेरित किया तो नतीजा यह हुआ कि कुछ ही महीनों में वह पढ़ने

लग गया। इस तरह भूगोल विषय के माध्यम से वह आनंददायी तरीके से भाषा को पढ़ना सीख रहा था।

उदाहरण 3

महाराष्ट्र राज्य के पाठ्यक्रम में पाँचवीं कक्षा के भूगोल विषय में ‘विषुवतरेखीय तल से अक्षांशों के कोण की गणना’ की संकल्पना दी गई है। इसी कक्षा के गणित विषय में ‘कोण माप’ की संकल्पना भी दी गई है। एक अध्यापिका ने भिन्न विषयों में दी गई इन दोनों संकल्पनाओं को एक साथ विद्यार्थियों के सामने रखा। तब अध्यापिका ने पाया कि दोनों संकल्पनाएँ समझने में विद्यार्थियों को आसानी हुई। इससे प्रेरित होकर उस अध्यापिका ने विभिन्न विषयों की भिन्न-भिन्न संकल्पनाओं को एक ही अध्ययन अनुभव में पिरोकर विद्यार्थियों के सामने रखा। अध्यापिका ने अनुभव किया कि कक्षा में जिन विद्यार्थियों को कुछ विषयों में कठिनाई महसूस होती थी उन विद्यार्थियों ने भी ऐसे विषयों की

संकल्पनाओं को सहजता से हासिल कर लिया था। अब विद्यार्थियों के लिए शिक्षा तथा जीवन समीप आ गए थे।

इस तरह विभिन्न विषयों में सह-संबंध स्थापित करना या एक ही अनुभव से विभिन्न विषयों को सीखने के प्रतिफल हासिल करना ‘समन्वित शैक्षिक दृष्टिकोण’ कहलाता है। समन्वित शैक्षिक दृष्टिकोण को स्वीकार करने से सीखने की प्रक्रिया को प्राकृतिक बनाया जा सकता है। ऐसा करके शिक्षा को जीवन के समीप लाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 4.2 में कहा गया है, ‘विषय-विशेषज्ञों के आ जाने के बावजूद विषयों के बीच परस्पर संबंध देखने को प्रोत्साहित किया जाएगा।’ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ‘कला-समन्वय’ और ‘खेल-समन्वय’ को प्रोत्साहित किया गया है। शिक्षा के इस समग्र तथा एकीकृत स्वरूप के कारण शिक्षा प्रक्रिया को आनंददायी तथा रुचिकर बनाने में काफ़ी सहायता मिलेगी।

संदर्भ

- कुलकर्णी, वि. म. 2013. *शिक्षणाचे तात्विक, सामाजिक व सांस्कृतिक यथार्थदर्शन*. यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नासिक.
- गांधी, मोहनदास. 2014. *बुनियादी शिक्षा*. सर्व सेवा संघ, वाराणसी.
- पानसे, रमेश. 2010. *कर्ता-करविता*. भारतीय अर्थविज्ञानवर्धिनी, पुणे.
- भावे, विनोबा. 2015. *शिक्षा—तत्त्व आणि व्यवहार*. परमधाम प्रकाशन, पवनार.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.
- म. रा. शै. सं. व प्र. प. 2013. *प्राथमिक शिक्षा अभ्यासक्रम 2012*. संचालक, महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद्, पुणे.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.